**अमर शहीद हेमू कालानी के जयंती शताब्दी वर्ष के शुभारंभ के अवसर पर संबोधन**

---

- आज का दिन भारत के इतिहास में बड़ा विशेष दिन है। आज ही के दिन वर्ष 1931 में शहीद-ए आजम सरदार भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु ने सर्वोच्च बलिदान दिया था और आज ही के दिन साल 1923 में शहीद हेमू कालानी का जन्म हुआ था।

- माँ भारती के इन सच्चे सपूतों ने आजाद भारत के सपने को साकार करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। 25 – 25 साल की छोटी उम्र में शहादत दे दी।

- मैं शहीद भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु और शहीद हेमू कालानी जी के प्रति कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, उनके श्रीचरणों में अपना नमन अर्पित करता हूँ।

- माननीयो, 20 वर्ष से भी कम आयु में हेमू कालानी जी देश के लिए बलिदान हो गए थे। स्वतंत्रता के बाद संसद परिसर में श्री हेमू कालानी की स्मृति संजोए रखने के लिए उनकी प्रतिमा स्थापित की गई थी। आज हम इसी परिसर से अमर शहीद हेमू कालानी जी की जयंती के शताब्दी वर्ष का शुभारंभ करने जा रहे हैं।

- साथियो, इसी वर्ष हमारा देश अपनी आज़ादी के 75 वर्ष भी पूरे कर रहा है। कितना सुखद संयोग है कि देश अपनी आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाने के साथ अपने अमर सपूत की जयंती का शताब्दी वर्ष भी मना रहा है।

- यह अवसर शहीद हेमू कालानी के जीवन संदेश को, उनकी अनमोल विरासत को और अधिक समृद्ध बनाएगा; ऐसा मेरा विश्वास है।

- मित्रो, एक कहावत है कि पूत के पाँव पालने में ही दिख जाते हैं यानि बचपन में ही पता लग जाता है कि यह व्यक्ति किन गुणों का धनी बनेगा। शहीद हेमू कालानी बचपन से ही साहसी और क्रांतिकारी प्रवृत्ति के थे। 7 वर्ष की आयु में वो तिरंगा लेकर अंग्रेजों के सामने से गुजरते और अपने दोस्तों के साथ क्रांतिकारी गतिविधियों का नेतृत्व करते थे।

- **किशोर आयु में ही उन्होंने अपने साथियों के साथ विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया और लोगों से स्वदेशी अपनाने का आह्वान किया।**

- साल 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी हेमू ने भागीदारी की। हेमू को जेल में यातनाएं दी गईं, उनके साथियों के नाम पूछे गए; मगर हेमू कालानी जी ने अपने एक भी साथी का नाम बताने से इनकार कर दिया।

- **सोचिए उस उम्र में क्या साहस रहा होगा! क्या प्रतिबद्धता रही होगी! क्या हिम्मत रही होगी! जब उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई। तब भी वह 19-20 साल का युवा निराश नहीं हुआ, देश प्रेम के अपने मार्ग से विचलित नहीं हुआ। इतना मजबूत मन, इतना साहसी व्यक्तित्व विश्व के इतिहास में गिने-चुने ही देखने को मिलते हैं।**

- हेमू कालानी वो व्यक्ति थे, जिन्होंने 'इंकलाब-जिंदाबाद' और 'भारत माता की जय' के नारे लगाते हुए अपने हाथों से फांसी का फंदा गले में डाला, जैसे वे कोई फूलों की माला पहन रहे हों और जब फांसी से पहले उनसे आखिरी इच्छा पूछी गई, तो उन्होंने भारतवर्ष में फिर से जन्म लेने की इच्छा जाहिर की। देश की माटी के ऐसे लाल को मैं शत शत नमन करता हूँ।

- **आप गणमान्यों ने इस कार्यक्रम के लिए पहल की, इसके लिए आपका साधुवाद है। देश के नौजवानों को उन हुतात्माओं के बारे में जानना चाहिए, जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी निभाते वक़्त अपनी उम्र की परवाह नहीं की, जिन्होंने राष्ट्र हित को अपना धर्म माना, देश के लिए जीना-मरना ही अपना परम कर्तव्य समझा।**

- **शहीद हेमू कालानी जैसे क्रांतिवीर देश के नौजवानों के लिए प्रेरणा का अविरल स्रोत हैं, आज जरूरत हैं कि देश की युवा पीढ़ी इनके बारे में पढ़े और उनके जीवन का ध्येय समझे। मेरी कामना है कि आज का यह समारोह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल हो।**

- **शहीद हेमू कालानी के जीवन वृत्त से जुड़ा साहित्य देश के हर प्रांत, हर वर्ग के लोगों को प्रेरित करे, इसी अभिलाषा एवं शुभेच्छा के साथ आपको बहुत बहुत शुभकामनाएं।**

- **धन्यवाद। जय हिन्द।**

---